अध्याय - 5

शोध के सारांश एवं निष्कर्ष

अध्याय - 5

शोध के सारांश एवं निष्कर्ष

5.1 प्रस्तावना

वर्तमान अध्ययन में" विद्यालय और समाज कि संबंधों पर शिक्षकों की दृष्टिकोण पर एक अध्ययन" शीर्षक पर एक सर्वेक्षण अध्ययन है । जिसके अंतर्गत विद्यालय पर समाज के प्रभाव, विद्यालय गतिविधि का छात्रों पर प्रभाव तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का विद्यार्थियों पर हो रहे प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है ।

5.2 सारांश

शिक्षा का क्षेत्र निरंतर नवीन ज्ञान की खोज से संबंधित है शिक्षा ,शिक्षक एवं शिक्षण कार्यक्रमों में भी शिक्षा संबंधित विकास एवं गतिविधियां निरंतर उपयोग में लाई जाती हैं। वर्तमान समय में यह एक आवश्यकता आधारित कार्यक्रम बन गया है । शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम है। यह मनुष्य को समाज व आसपास के पर्यावरण का ज्ञान ,सांस्कृतिक तथा विभिन्न परिस्थितियों में भूमिकाओं का निर्वाह करने योग्य बनाता है, तथा उत्तरदायित्व का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षक के ऊपर किया निर्भर करता है कि वह किस प्रकार की नागरिक तैयार करते हैं इसी ओर संकेत करते हुए डॉक्टर राधाकृष्णन 1948 के अनुसार" समाज में अध्यापक का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परंपराओं और तकनीकी कौशल पहुंचाने का केंद्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्वलित करने में सहायक देता है"।

5.3 वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष

अध्ययन से जो मुख्य निष्कर्ष निकले हैं, उन्हें नीचे सूचीबद्ध किया गया है:

I. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों पर समाज के प्रभाव के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है ।

II. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के विकास पर विद्यालय गतिविधि के प्रभाव के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है ।

III. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के नैतिक विकास पर सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है ।

IV. सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का विद्यालय तथा समाज से संबंधित दृष्टिकोणओं के ऊपर सकारात्मक संबंध पाया गया है ।

5.4 प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

विद्यालय और समाज आपस में जुड़े हुए हैं क्योंकि विद्यालय समाज का एक छोटा सा रूप है यहां जॉन डेवी ने कहा है जो कहीं ना कहीं सच है विद्यालय में शिक्षा दिया जाता है और शिक्षा व्यक्ति समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है शिक्षा के बिना कोई भी राष्ट्र, समाज यह व्यक्ति प्रगति नहीं कर सकता शिक्षा और समाज एक दूसरे के पूरक है किसी भी विद्यालय को सही तरह से संचालित करने के लिए उस विद्यालय के शिक्षकों की दृष्टिकोण बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए विद्यालय की शिक्षा की गति या व्यवहार कोई हमें गठित करना होता है

हम यदि समाज की बात करें तू हम देख सकते हैं कि कुछ किलोमीटर की दूरी के अंतराल में ही लोगों के व्यवहार रीति रिवाज बोलचाल भाषा सब बदला हुआ हमें नजर आता है जो की एक शिक्षक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हम यदि किसी विद्यालय पर जाते हैं तो उस क्षेत्र के विद्यार्थियों को समझने के लिए हमें उस स्थान

का ज्ञान होना चाहिए वहां के व्यवहार तौर-तरीके परंपरा आदमियों का ज्ञान ताकि हम बच्चों के मानसिक स्थिति को समझ सके अन्यथा हम उन्हें सही शिक्षा नहीं दे सकते हैं इसके अंतर्गत माता-पिता ओं को भी विद्यालय से जोड़ने का कार्य शिक्षकों का ही है क्योंकि माता-पिता विद्यालय से जुड़ते हैं तो वहां विद्यालय में हो रहे गतिविधियों को जानेंगे और विद्यालय तथा समाज के विकास में अपना योगदान देंगे विद्यालय में हो रहे गतिविधियों को जानेंगे और विद्यालय तथा समाज के विकास में अपना योगदान देंगे।

विद्यालय एक ऐसी जगह है जहां कई जाति ,धर्म ,समुदाय के बच्चे एक साथ एक ही छत के नीचे ज्ञान प्राप्त करते हैं जहां वे एक दूसरे को जानने का समझने का अवसर मिलता है एक दूसरे की परंपराओं को समझने तथा उससे जुड़े गाथाओं को समझने का मौका जिससे कि वह आने वाले समय में एक दूसरे के संस्कृति का सम्मान कर सके जिसके वजह से कहीं ना कहीं विद्यालयों में भी सांस्कृतिक कार्यक्रम करवाए जाते हैं और छात्रों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में अपना योगदान देते हैं और इससे बाकी सभी लोगों को , उस पर्व के पीछे के महत्व को जानने का मौका मिलता है जिस वजह से वह आगे चलकर एक दूसरे को समझते हैं अथवा सम्मान करते हैं जो कि एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण है और इस प्रकार की गतिविधियों के कारण छात्रों में एकता की भावना नेतृत्व करने की क्षमता का भी विकास होता है।

समुदाय समाज का एक लघु रूप है किसी एक समुदाय के द्वारा ही एक समाज का निर्माण होता है। आज एक अच्छी समाज के निर्माण के लिए अच्छी शिक्षा की आवश्यकता है अच्छी शिक्षा के लिए शिक्षकों का दृष्टिकोण भी अच्छा होना चाहिए दृष्टिकोण वर्तमान पहलू को देखने का , दृष्टिकोण बदलते समय को समझते हुए

अध्ययन प्रक्रिया को बदलने का, जैसे की हम देख सकते हैं ,वर्तमान 2019 में कोविड-19 से शिक्षा की प्रक्रिया में किस प्रकार से बदलाव आया है अभी वर्तमान हम आधुनिक वस्तुओं का सहायता लेते हुए छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं या कहें कि आईसीटी का प्रयोग हम पूरी तरह करने के लिए विवश हो गए हैं परंतु ऐसी स्थिति में भी हमें इस बात का ध्यान देना आवश्यक है कि किस बच्चे के पास सुविधा है अथवा नहीं क्योंकि बदलती परिस्थिति के कारण कुछ बच्चे पीछे छूट सकते हैं अगर शिक्षक इस बात का ध्यान ना दे तो हो सकता है कि वह बीच में ही अपना पढ़ाई छोड़ दें, जो एक वर्तमान शिक्षक होने के नाते मैं कह सकती हूं कि वह सही नहीं हो सकता क्योंकि कहीं ना कहीं उसका नकारात्मक प्रभाव हम समाज में देख सकते हैं, इसलिए सबको साथ में लेकर चलना ही एक शिक्षक का कर्तव्य है।

5.5 भावी अध्ययन के लिए सुझाव

1. इस अध्ययन को विस्तृत क्षेत्र में किया जा सकता है ।

2. अध्ययन बड़े आंकड़ों के आकार पर किया जा सकता है ।

3. अध्ययन अन्य चर जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, आय की स्थिति, धर्म, जाति आदि पर किया जा सकता है ।

4. अध्ययन के आयामों को वितरित किया जा सकता है जैसे विद्यालय के उपदेश उपदेश को प्रभावित करने वाले तत्व छात्रों की गतिशीलता अभिभावकों का हस्तक्षेप इस प्रकार से प्रभावित होती है

5. चूंकि वर्तमान अध्ययन के लिए आंकड़ों का संग्रह सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित था, इसलिए इस तरह के अध्ययन

अन्य विद्यालयों पर भी किया जा सकता है जैसे कि गैर सहायता प्राप्त विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, आवासीय विद्यालय, सैनिक विद्यालय आदि

6. वर्तमान अध्ययन की प्रकृति मात्रात्मक है। इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि बेहतर परिणामों के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों विधियों के मिश्रण को नियोजित करके अध्ययन की प्रतिकृति बनाई जा सकती है।